भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXIII (तेईसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 24 ओक्टोबर से 30 ओक्टोबर, 2023 तक

हरियाणा		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		20	21	22	23	24	26	27	28	29	30
	हिसार	0	0	0	0	0	0	2	0	0	0
	जींद	0	0	0	0	0	0	0	2	0	0
	सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	रोहतक	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

हिसार में, 147 से 184 दिन के पश्चात फसल बीजकोष के विकास से लेकर बीजकोष खुलने की अवस्था में है। कपास की दूसरी और आखिरी चुनाई प्रगति पर है । अधिकांश कपास क्षेत्रों में सफेद मक्खी और जैसिड की आबादी आर्थिक सीमा स्तर से नीचे है। अधिकांश कपास के खेतों में, हरे गुलरों में गुलाबी सुंडी का प्रकोप अधिक है। कई खेतों में गुलरों का सड़ना और खराब खुले गुलरों को भी देखा गया।

सिरसा में, फसल बीजकोष खुलने की अवस्था में है। कपास की दूसरी चुनाई पूरी हो चुकी है और अधिकांश स्थानों पर अंतिम चुनाई प्रगति पर है। रिपोर्ट किए गए स्थानों पर सफेद मक्खी और जैसिड की संख्या ईटीएल से नीचे हैं और कीटों की आबादी क्रमशः 9.8-14.2 और 1.0-2.3/3 पत्तियों के बीच है। अधिकांश स्थानों पर बीजकोषों में 70-80% के बीच बीजकोष क्षति के आधार पर गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गई है। सभी स्थानों पर बोल सड़न की घटनाएं देखी गई। क्षतिग्रस्त और बंद गुलरों में 40-50 प्रतिशत गुलरों में सड़न देखी गई है।

परामर्श:

हिसार में, बारिश के कारण, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे तेज धूप के दौरान कपास को सुखाने के बाद चुनें और बीज कपास को अच्छी तरह से सूखने के बाद ही उनका भंडारण करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। देर से बोई गई कपास की फसल में गुलाबी सूँडी संक्रमण के खिलाफ प्रबंधन के उपाय करें। यदि गुलाबी सूँडी का संक्रमण ईटीएल (5-10% संक्रमित हरे गूलर) पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @100 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। गुलाबी सूँडी के भारी संक्रमण की स्थिति में कपास की फसल का आगे तक ना ले जाये । गुलाबी सूँडी की आबादी को कम करने के लिए अंतिम कटाई के बाद खेत में जानवरों को कपास के खेतों में चरने की अनुमति दें। यदि आवश्यक हो तो कपास के डंठलों को लंबवत स्थिति में रखें। कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @ 0.04% या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @0.3% या क्रेसॉक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 0.1% या प्रोपिनेब 70 डबल्यू पी @ 0.25% या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 0.1% या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 0.2% या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @ 0.1% या फ्लक्सापायरोक्सैड167g/l + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 g/l एससी @ 0.6% का बोल सड़न रोग और पत्तेदार कवक पत्ती धब्बों का प्रबंधन करने के लिए का पत्तियों पर छिड़काव करें।

सिरसा में किसानों को खेतों में सिंचाई बंद करने की सलाह दी गई है। नियमित रूप से कीट-पतंगों की घटनाओं की निगरानी करें। सिरसा में किसानों को सलाह दी जाती है कि वे सूटी फफूंद के विकास के मामले में, प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @1 मिली/लीटर या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी @2.5 ग्राम/लीटर पानी के 3 रोगनिरोधी/चिकित्सीय छिड़काव 15 दिनों के अंतराल पर दें। यदि गुलाबी सूँडी, हरे गूलर क्षति के आधार पर ईटीएल को पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या

साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @ 0.04% या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @0.3% या क्रेसॉक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 0.1% या प्रोपिनेब 70 डबल्यूपी @ 0.25% या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @ 0.1% या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 0.2% या एज़ोक्सिस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @ 0.1% या फ्लक्सापायरोक्सैड167g/l + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 g/l एससी @ 0.6% का बोल सड़न रोग और पत्तेदार कवक पत्ती धब्बों का प्रबंधन करने के लिए, पत्तियों पर छिड़काव करें। कूड़े रहित स्वच्छ कपास के चुनाई के दिशानिर्देशों का पालन करें। कपास की अंतिम चुनाई के बाद कपास के डंठलों को कॉटन श्रेडर या रोटावेटर की सहायता से खेतों में मिला दें। भेड़, बकरी या मवेशियों को खेतों में चरने दें।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXIII (तेईसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 24 ओक्टोबर से 30 ओक्टोबर, 2023 तक

राजस्थान		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		20	21	22	23	24	26	27	28	29	30
	अजमेर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	जोधपुर	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	नागौर						0	0	0	0	0
	पाली	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
	श्री गंगानगर	0	0	5.8	0	0	0	0	0	0	0
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी	64.5 to 115.5 मिमी			115.6 to 204.4 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा	भारी वर्षा			बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में, 119 से 165 दिन के पश्चात फसल, बीजकोष के विकास और बीजकोष के खुलने की अवस्था में है। अंतरकृषि क्रियाओं का संचालन किया गया है। अधिकांश खेत खरपतवार से मुक्त हैं। जैसिड की संख्या ईटीएल के ऊपर देखी गई और सफेद मक्खी अभी भी ईटीएल से नीचे है। बीमारियों का प्रकोप नहीं है।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, फसल बीजकोष के खुलने अवस्था में है। कपास की चुनाई प्रगति पर है। किसानों के खेतों में रस चूसक कीटों का प्रकोप ईटीएल को के नीचे है एवं गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल को पार कर गयी है। किसानों के खेतों में सीएलसीयूडी (पीडीआई 5-10%) की घटनाएँ भी दर्ज की गईं।

परामर्श:

दक्षिणी राजस्थान (बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, डूंगरपुर, प्रतापगढ़, राजसमंद और उदयपुर) में बादल छाए रहने और बारिश नहीं होने का अनुमान है। किसानों को सलाह दी जाती है कि वे पूरी तरह से खुले हुए कपास के बीजकोषों की साफ-सुथरी चुनाई करें। यदि संभव हो तो गुलाबी सूँडी से संक्रमित कपास को अलग से चुनें और संग्रहित करें। संक्रमित कपास को आगे फैलने से रोकने के लिए उसे ठीक से संग्रहीत करना चाहिए। रस चूसने वाले कीटों के संक्रमण की निगरानी करें और यदि कीटों की संख्या ई टी एल के पार चली जाये तो इसे नियंत्रित करने के लिए डायफेंथियुरोन 50% डब्लूपी @ 600 ग्राम/हैकटैर या फ्लोनिकैमिड 50 डब्लूजी @ 200 ग्राम /हैकटैर का छिड़काव करें। नियमित रूप से गुलाबी सुंडी की उपस्थिति की निगरानी हरे गूलर को काट कर उनका अवलोकन करके करें एवं और लार्वा सहित प्रभावित फूलों (रोसेट फूल) को नष्ट कर दें। यदि गुलाबी सूँडी, ईटीएल को पार कर जाता है, तो साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक को दोबारा न दोहराएं और जब भी दुबारा छिड़काव की आवश्यकता हो तो , कीटनाशक को बारी-बारी से प्रयोग करें। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, सर्कोस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें।

श्रीगंगानगर और हनुमानगढ़ में, किसानों को सलाह दी जाती है कि वे 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन ट्रैप लगाकर गुलाबी सुंडी के संक्रमण की निगरानी करें। गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल के पार होने पर गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए साइपरमेथ्रिन 10 ईसी @ 300 मिली/एकड़ या साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 200 मिली/एकड़ या डेल्टामेथ्रिन

2.8 ईसी @200 मिली/एकड़ या फेनप्रोपेथ्रिन 10 ईसी @ 300 – 400 मिली/एकड़ या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 200 मिली/एकड़ या अल्फासाइपरमेथ्रिन 10 ईसी @120 मिली/एकड़ का छिड़काव करें। एक ही कीटनाशक का प्रयोग लगातार नहीं करना चाहिए तथा आवश्यकता आधारित छिड़काव को पिछले छिड़काव के 12-15 दिन बाद करना चाहिए। मायरोथेसियम, कोरिनेस्पोरा, सर्कोस्पोरा, अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट, गूलर सड़न रोग और आर्द्र मौसम ब्लाइट जैसे पर्ण रोगों के मामले में, प्रोपीकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यूपी @ 4 ग्राम या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पायराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या मेटिरम 55% + पायराक्लोस्ट्रोबिन 5% डबल्यूजी @ 20 ग्राम प्रति 10 लीटर पानी का पर्णीय छिड़काव करें।

भा. कृ. अनु. प.- केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

ICAR-central Institute for Cotton Research, Nagpur

An ISO 9001:2015 Certified Organisation

कपास की खेती के लिए XXIII (तेईसवाँ) साप्ताहिक परामर्श, 24 ओक्टोबर से 30 ओक्टोबर, 2023 तक

मध्य प्रदेश		पिछले सप्ताह में वास्तविक वर्षा(मिमी)					अगले सप्ताह अनुमानित वर्षा (मिमी)				
		ओक्टोबर					ओक्टोबर				
		20	21	22	23	24	26	27	28	29	30
	खरगाँव										
	धार	0	0.3	0	0	0	0	0	0	0	0
	खांडवा										
वर्षा की मात्रा एवं रंग कोड		0.1 to 2.4 मिमी		2.5 to 15.5 मिमी		15.6 to 64.4 मिमी		64.5 to 115.5 मिमी		115.6 to 301.0 मिमी	
वर्षा श्रेणी		बहुत हल्की वर्षा		हल्की वर्षा		मध्यम वर्षा		भारी वर्षा		बहुत भारी वर्षा	

फसल की स्थिति:

खंडवा में, फसल 119 से 168 दिन के पश्चात फूल आने, बीजकोष बनने और बीजकोष के खुलने की अवस्था में है। अधिकांश क्षेत्रों में जैसिड और एफिड का प्रकोप तथा कुछ क्षेत्रों में सफेद मक्खी का प्रकोप दर्ज किया गया। कुछ खेतों में बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट सर्कोस्पोरा और अल्टरनेरिया लीफ स्पॉट देखे गए।

परामर्श:

किसानो को सलाह दी जाती है की वह मौजूदा क्षेत्रीय परिस्थितियों के अनुसार खेतों में बैल द्वारा खींचे गए कोल्पा से निराई-गुड़ाई करें। गुलाबी सूँडी की गतिविधि की निगरानी के लिए 5/हेक्टेयर की दर से फेरोमोन जाल स्थापित करें। रोसेट फूलों की उपस्थिति का निरीक्षण करें और उन्हें इकट्ठा करके तुरंत नष्ट कर दें। चूंकि फसल 120 दिन से अधिक हो गई है, अतः गुलाबी सूँडी की संख्या ईटीएल के पार होने पर, गुलाबी सूँडी के प्रबंधन के लिए साइपरमेथ्रिन 25 ईसी @ 10 मिली या लैम्ब्डा साइहलोथ्रिन 5% ईसी 10 मिली या डेल्टामेथ्रिन 2.8 ईसी @ 10 मिली या फेनवेलरेट 20 ईसी @ 10 मिली का 10 लिटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। बैक्टीरियल ब्लाइट रोग के प्रबंधन के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 50 डब्ल्यूपी/डब्ल्यूजी @25-30 ग्राम/10 लीटर पानी का छिड़काव करें। कार्बेन्डाजिम 12% + मैनकोजेब 63% डबल्यूपी @30 ग्राम या कार्बेन्डाजिम 50 डबल्यूपी @4 ग्राम या क्रेसोक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @ 10 मिली या प्रोपीनेब 70 डबल्यूपी @25 ग्राम या प्रोपिकोनाज़ोल 25 ईसी @10 मिली या मेटिरम 55% +पाइराक्लोस्ट्रोबिन5% डबल्यूजी @20 ग्राम या एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या फ्लक्सापायरोक्सैड 167 ग्राम/लीटर + पाइराक्लोस्ट्रोबिन 333 ग्राम/लीटर एससी @ 6 ग्राम को 10 लीटर पानी में मिलाएं एवं सर्कोस्पोरा पत्ती धब्बा, मायरोथेसियम लीफ स्पॉट, कोरिनेप्सोरा पत्ती धब्बा, अन्य फफूंद पत्ती धब्बों और फफूंद बोल सड़न रोगो के खिलाफ खेतो में पत्तियों पर छिड़काव करें। कपास चुनते समय उचित सावधानी बरतनी चाहिए। तेज धूप में ओस सूखने के बाद ही कपास की चुनाई शुरू करनी चाहिए। आंशिक रूप से खुले, अविकसित बीजकोष या नमी वाले बीजकोषों से कपास की चुनाई नहीं करनी चाहिए। कपास चुनने के बाद उसे साफ कपड़े या तिरपाल पर रखना चाहिए। कपास चुनते समय सूखी पत्तियों के टुकड़े, डंठल और मिट्टी को कपास में मिलाने से बचें। अधिक नमी की कपास के रेशे की ख़राब हो सकते है । अधिक नमी लिंट के साथ-साथ बीज की गुणवत्ता को भी नुकसान पहुँचाती है। बाद में आवश्यकता के अनुसार चुनी हुई कपास का संग्रहण करें। कपास के रेशे के भंडारण करते समय कुछ सावधानियों का पालन किया जाना चाहिए। भण्डार गृह हवादार एवं पक्का होना चाहिए। यदि आवश्यक हो तो कपास के भंडारण करने से पहले भंडार गृह का धूम्रीकरण किया जाना चाहिए। खेतों से कपास के डंठलों को नष्ट कर दें और खेतों में डंठलों का ढेर लगाने से भी बचें। ग्रे फफूंदी और पत्ती के धब्बों के प्रबंधन के लिए, एज़ोक्सीस्ट्रोबिन 18.2% w/w + डिफ़ेनोकोनाज़ोल 11.4% w/w एससी @10 मिली या क्रेसॉक्सिम मिथाइल 44.3 एससी @10 मिली या कार्बेन्डाजिम 12%+मैन्कोज़ेब 63% डबल्यूपी @/30 ग्राम/10 लीटर पानी में मिलाकर पत्ते पर छिड़काव करें।